

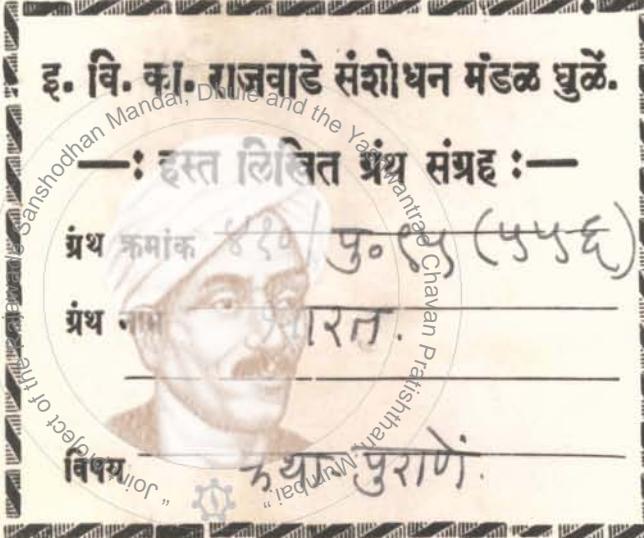
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४३० पु.०८५ (५५६)

ग्रंथ नाम अरत.

विषय नवाचारपुराण.



० श्रीगणेशायनमः॥ श्रीसरस्वयैनमः॥ श्रीकृष्णदेवतायनमः॥ श्री
 गुरुपरब्रह्मेनमः॥ श्रीवेदव्यासायनमः॥ श्रीमातपितृस्योनमः॥
 इयाकोलतिपरमात्मा॥ ज्ञात्कर्त्तव्यतुरुचोत्तमा॥ विष्णुशंकरज्ञा
 णिक्रमा॥ व्यक्तायकनमीयती॥ अन्नपूर्णकरवीरनिवासीनी॥
 उमाहालक्ष्मीविष्णुलननी॥ लीचाकृष्णनुग्रहतरणी॥ नासीन
 ववमातें॥३॥ उमेविदादिलादि कृष्ण॥ दरिद्रवनायवकज्ञा
 ज्ञा॥ दासवस्तातेंखेलाक्षा॥ क्षमप्रभुकृष्णपैची॥४॥ तीचाक्षाठोनि
 वरदहस्ता॥ संतसमेसिलाक्षोस्ता॥ उमेसासिंहाश्चयेंवस्ता॥
 कुलरमाचांपिरवक्षा॥५॥ वंदुसोनारिभैरव॥ लेपेदिष्टका
 गोरव॥ उमेसाज्ञाक्षेपनकैरव॥ वदनस्त्वद्विंश्याच्या
 लीक्षा विष्णुभरद्विष्टरु॥ दक्षात्रयज्ञगद्धरु॥ त्वायेनिजामे
 खवसागरु॥ मागेतरलज्ञासंस्था॥६॥

Don't profane Sanskrit Mantra, Dhule and the Yogi want
 Charan Paduka, Mumukshu

(2)

आणीकहितरतिपुणं॥ जोड्यस्विसेनेउदारगाया॥ सुमा
 दिक्षाचियापारजं॥ तुकितांउनेअपाउँ॥ नासाचिकपार
 श्रीमगवती॥ अनुयहतोचिगणधियती॥ बोधप्रकाशेंचिद्रभ
 स्ती॥ हृदयाकाशिंसळकतुग्धा॥ लीचिंबत्वप्रकाशले॥ वि
 ष्टुमयनिष्ठकेने॥ एव पंचायतनलाघले॥ प्रादेश्विलेंगु
 रुरुषीं॥ तोष्णेरेकरीकिंकरा॥ वाचपणेनबोलेसेरा
 कथानिरुपणज्ञाधिकारा॥ सीज्ञानिनेमिलें॥ १०॥ जातं
 दाविलेनिपंथेचाले॥ बोलतुकेचिबोले॥ कवित्वगवन्ये
 निडोले॥ बोलतांदंउपावसी॥ ११॥ लीज्ञप्रसादस्त्रणनिवेगी॥
 प्रणम्यकेलेसावाणी॥ हेचनमनश्चोतयांलागी॥ मेकचिपावो
 सपस्ता॥ १२॥ मुकेम्यरकवीज्ञारता॥ टिकाप्रांसळश्रीव्यासकृता॥
 जोवेहंवाचागुर्याधी॥ श्रुतिपुराणेबोलती॥ १३॥ जोरायातेंवीर

Joint Project of Sahitya Akademi, Sanskriti Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Sanskriti Museum, Warananagar

(2A)

रसु॥ विप्रवर्यात्मेदसारं शु॥ तत्वार्थबोधें परमहं सु॥
 योगेष्वरमाविती॥१॥ बुद्धिवुक्तिसागरु॥ ऐसें मानिति
 प्रत्ययेचतुरु॥ विज्ञासियात्मेष्टगानु॥ सुरवानं दवद्विकु॥२॥
 विद्याप्रविषाक्षारमपेतिता॥ कोउकामानितिकण्ठमृत॥ दोषज
 दोषीयात्मेज्ञाती॥ मुखियं गोष्ठा के॥३॥ धापवतामात्रीकन
 कमेरु॥ तजागामात्री॥४॥ गरु॥ जाठागास्त्रिकाव्यगरु॥
 हागोरवईयेघंघी॥५॥ व्यासननस्यादेहुगालुनिसुर
 ससारं शागोउ॥ देहाक्षापात् अलकाउ॥ नाबदेवेआव
 डी॥६॥ तें हरसघंघीतेसेवने॥ तें अभ्यशकं चुनिकाय सुणो॥ क
 कंकरेखेल्यवचोदने॥ कामचकारिवाकिले॥७॥ आसघंघिगि
 रिवेंसोने॥ संस्कृतस्कोटिगालुनिमले॥ देहमावाधितिलेणे॥
 शाहियराज्ञिसुअडिता॥८॥ तेजेववित्ताकर्णिसूषण॥ काठोपर

③

तेंकरावेंकाने॥ओतेतुस्तीविच्यसण॥निर्मद्धरविचारा॥२१॥
आसोतउपचारात्मागोष्टी॥संतकुपाओपारगंगी॥जास
तांझापराधाच्चाकोटी॥मुक्त्तासतिझादुतें॥२२॥जातां
साविकसाबनायाउपतली॥सकासनायाइसेनी॥का
मादि कौरवदुर्जनी॥राज्यासगानीगांडिली॥२३॥जानेक
साघनाचिंबसने॥सक्षेत्रातिराविकल्पदुःखासने॥निर्म
यविचारकीक्षाच्छेत्तिरसविली॥२४॥तेंविविस्तारेप
रिसिउ॥ओतिसादरचिताददुःखापत्रयातेंनिरसिले॥
कथाअवणेलाधकी॥२५॥मुकेष्यरसारवकथा॥राज्ञाइनेज
यपरिलक्षा॥वेशंपायनविद्योषवक्ता॥आलादरेनिरोपी॥२६॥
खाउबवणमाहुआगी॥मयदानवलवावेगी॥तेथेकछाऊने

वसुदेव देवकिचेन्द्ररण॥ पाणावयार्द्धीमन॥ तुम्हेदेष्वु
 नि आज्ञावनन॥ येचकाकि उत्तमासे॥ ५५॥ आज्ञादपावयास
 मर्घनोहे॥ ज्ञातुनिमाग्नि हीष्ययावे॥ आमुले क्षितेष्टवाने॥ प
 दपभिज्ञातुल्लग्ना॥ ५६॥ कर्त्तव्यं भिसिनमस्कारा॥ सन्मानिला
 युधिष्ठिरा॥ अमात्यनामि उत्तमामि॥ अमानंदेनघरती॥ ५७॥
 द्रौपदिसुखदेवे साधा॥ वृषभनाम सहृद्देवाते॥ आकं शिकेस
 हुदेवाते॥ नकुलासहितउत्तमा॥ ५८॥ उच्यैष्वयाने सोहोद
 इच्छारि॥ तेसेवारुद्गुपिक्षेष्टु॥ दासक सारथि निजकरि॥
 प्रनोवेऽग्निकितु॥ ५९॥ रनचाकं सुवर्णगारो॥ गरुडमुख्य
 विमनेत्तमा॥ पात्युच्या प्रनेत्तुरा॥ गरुडमुख्य निरवका॥ ६०॥
 धनकहंकर्मं द्वुष्टतुरे॥ कर्मकर्ग जलितिजयमकारे॥ आ
 शीवीचनीरुचेष्टरे॥ मुख्यकल्पाणबोलि लो॥ ६१॥ राणाहनिस

३८

प्राचीन अवधारणा अनुसारी अवधारणा

मरस्ताते॥ प्रयाण केले कोकनाये॥ मार्गक्रिमुनि प्राप्य अरिते॥
द्वारा वति दाकिनी॥ ध्याना कारण सिवरि जति सरी॥ सपुत्र मगो
ह्याचिपायरी॥ इन स्वरुपामाझारी॥ आसुरामवस्तुतस
६३॥ तेष्यवर्ष पुरुषां तां उं॥ निराम आत्मामं उ स्वं उं॥
पाताळ कुठरा माझी इ उं॥ लाला नियामनं बु॥ ६४॥ ध्यानी
कलितांनयेयकी॥ नव अंगां याउ की॥ तेष्य प्रस्तुत
ब्रह्म मुरी॥ इन देवता निष्ठा वधा असो अंतर हारका
पुरि॥ प्रवेशो निवी वेचा द्वे... लुभर्मसजे मासा री॥ वाद
व परिवेशना॥ ६५॥ देवी संपति खुण॥ तेयिया दव सुड
द झाण॥ ये हुं अवकोकितां कछा॥ स्वानं द संपुर्ण सम
स्तो॥ ६६॥ दिव्य मुकुटि रनुकीर्ण॥ तेण उल्लिखेव सुदव चरण॥

(6)

नमस्करो निउघरुने॥ रेषति रमण वंदीला॥६८॥ सायुक्ति
 प्रव्युप्सां सांबगदु॥ जाकं गीले पुत्रबचु॥ तेवेकी उनाचाज्ञा
 नंदु॥ अम्लांड घटिन समातु॥६९॥ काम घेनुच्छिया काटो
 वस्त्रै घर्वां आतिवोरस॥ तेविद्युक्ति यास वोहो॥ जामा
 रामकवक्तिला॥७०॥ नमस्कारा नियां इननी॥ प्रवे
 षलारुक्तियी क्षुवनी॥ तेविकांशुघाचिय हायनि॥ रमा
 रमणविश्वामो॥७१॥ प्रयो जाए न मरस्तामो अी॥ समानि
 मिन्नीकवणे कुंसरी॥ तेविनुपरमरसाकम्भन तुरी॥ पर
 मादरे परिलिङ्गे॥७२॥ ईविसलापर्वतारता॥ मुकेष्यर
 कवी रचिता॥ सर्वदोघदवउनी देत॥ सुख सायुज्यो



Joint Project of the Pratapgad Sanskrut Mandal, Dhule and the
 Swami Dayanand Saraswati Sanskrit Museum,
 Mandvi

(5)

तया॥७३॥ इति श्री मन्महान् सारते मात्रा पुराण॥ समाप्त
विष्णु श्री कृष्णा द्वयं न स वा देनो नाम प्रथमो ध्यायः॥॥॥

श्री कृष्णा द्वयं लक्ष्मी प्रसादो ज्ञातु य उ उ उ उ उ

उ उ

उ उ

उ उ

उ उ

उ उ

उ उ

उ उ

उ उ



"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Ujjain and the Yashwantrao Chavhan Prashikshan Murti Bhawan, Mumbai"

उद्यराजाच्या सुरेखा ॥ त्रोकटिजो उल्लाङ्ग को निका ॥ माणि
 का चे विनाय का ॥ ऊळौ भुजाशोक ती ॥ २८ ॥ घोटिं पाच्य-च्या
 पाषाणी ॥ त्रोकसा चिन्नामठ पागणी ॥ याको निसुब नचिपा
 नीक न छ चे नीरे लिन्ना ॥ उल्लाङ्ग दाच्या न दक्षे सा ॥ वरिं बे
 स काराज हुंसा ॥ कप्रावे काङ्ग रुहिट सा ॥ भुजा फकी सोम्य
 का ॥ २९ ॥ वदनी विद्रुम राम साथ रिने भुजा फका चे घोटा ॥
 नीछ रन्ना चे जोळ सा ॥ नीछ चे यंत्रं गा ॥ ३० ॥ उच्च पाच्य-चे भु
 क पाखरे ॥ भुस्ति माणि के - रे ॥ रन्न न नीची सा कारे ॥ जे
 बुफके कंकिली ॥ ३१ ॥ ठास्तला च्यव के चीघोशी ॥ मधुरे नाच्य
 तिके कारी ॥ पुतकीया गाति सुस्थरी ॥ नृसुकरि वीसुतावे ॥ ३२ ॥
 समानाय काते चोज ॥ पुतके करि तिक यीके काज ॥ मेघकं
 जर जुंझति जुज ॥ ऊळा होता प्रभु ची ॥ ३३ ॥ मर्जिस्तं नीनृस्ति
 ह नुतोरी ॥ साच्या सारि रै लुकारती ॥ जीव्हान खे दंत पंकी ॥

The Bejawade Sansthan Mantra Dharm Sanskriti
 Sanskriti Pratishthan Chavand Peeth
 Sanskriti Pratishthan Chavand Peeth

पञ्चरागेशक कर्ती॥३६॥ टाकल्लुदंगवा द्वयासु॥ रागोधारि
 विनासरस॥ लेपेवाहुतिविशेष॥ कक्काविष्यकर्म्मची॥३७॥
 कौल्लुजमणीसीमवकमणी॥ स्वेवपाजोडिल्लेखणोखणी॥
 याक्कागिप्रवर्तनीयारजनि॥ काजनाहिदिपिके॥३८॥ मुव
 र्णप्रेसुवर्णप्रिप्परे॥ तेविशात्तरस्वणीमणीजोपुरे॥ प्र
 वेशकरिकांडाकांडारे॥ सायं ठटोडांकर्ती॥३९॥ प्रेषी
 वठपतिसौदामिनी॥ तेवापदकाल्लककतिगगनी॥ क
 नकककसावियाक्केणी॥ तीनाविनीग्रहाते॥४०॥ पञ्चरा
 गाचीकपाटे॥ श्रीगारश्रीदक्षीजधरपुठस्तमदर्शनि
 चेनिसठे॥ तेमफाकेउघडितां॥४१॥ ज्ञेतिहिरयांचिविवा
 ळो॥ चित्रशाङ्काविश्रामस्त्रळो॥ बक्कालीषरिगोबागुके॥ विचि
 तरंगेस्वेष्ठती॥४२॥ प्राक्काविसरुनीनामाउनियां॥ लसणे

सूरक्षेपाउठणियां॥ सुवर्णमुखेकारुनियां॥ मगसम्मा
 नेझुडियन्ती॥ रक्षासदृष्टुवणीचियाकिंती॥ चतुर्दशा
 नुवनाम्यात्माकृती॥ कुसरिजोउन्नारलहोती॥ साच
 किंचित्रलक्षणा॥ आभपाउरन्नंचिछुभुवने॥ पुष्पशाली
 ब्रह्मसदने॥ हिरेमोकि किंचित्प्रस्त्राने॥ कपुरगोरगणे
 शी॥ ४५॥ इद्वच्छ्रवहा॥ तुरर॥ यमवायुवहिजास्कर॥
 जणगंधवर्यहा किंचर॥ यन्त्रहारयाक्षिले॥ ४६॥ मद्भवु
 र्मवराहास्थके॥ दोषवारुजि कर्णीपाठकुके॥ रेखिलिस
 पुहिपावाके॥ त्रिविक्रमवाक्षिली॥ ४७॥ फागनिरामशीरा
 मचंद्र॥ आठवाउटवावसुदेवपुत्र॥ वोष्मकलंकीसुने
 व्र॥ दह्यावताररेखिले॥ ४८॥ द्वीपेखेतेहोललागर॥ कान
 नेसरितासयेवर॥ छपन्नदेखिचेराजेअर॥ मनुजाकृतिवि
 चित्रा॥ ४९॥

The Rajendra Singh Bhagwan Mandal, Dhule and the Krishnadeo Chidanand Saraswati Sanskrit University, Varanasi

किं हिकेर प्राय प्रारता। ज्ञाववारन्वित्रकागवता। शक्ति
 स्नाने अस्तु दृत। आसुर द्वुर्सेरे। विनी॥५०॥ योगी औं आसि
 आसने॥ तिर्तु किं काने शाखा। विनी॥ देस कता आभ्यास
 प्रागीनि॥ योगी जो नीजे रिती॥५१॥ सोम का वाचा पाषा
 णी॥ प्रज्ञी पुष्कर नानवर्णी। विचित्रवा पिका पुष्करणी॥
 विकासीत सुकासे॥५२॥ त्रिता। विचिदेवा गाइ॥ स्मर्ष प्र
 णी चेनदि केष्वर॥ नाद् विमला। विमला हुरे॥ सोमस्तु त्रीसो
 मलिं जा॥५३॥ उष्णो दृढ़ा
 लिदेसा॥ मंगवस्नानका। रता नोका॥ कलावरि श्री योद्धी
 परा। सुगंधो दके स्वेत कुलिमा॥ रत्नबाकानी प्रेमचक शाया
 जासने विलाने जा दिया॥ इंद्रगोपवणीची॥५४॥ स्फटि
 कमुमी असति ऊको॥ स्थके तेष्वे दीसकी लको॥ वस्त्रे सा
 वरुनि बको॥ चालतां च तुरहासती॥५५॥

जक भासतं स्थिर भासत ॥ भासतं पउति वर्षे सहिता बुन्द कियादेता
 ठोता ॥ माहाविजोद उपाण्ड्या ॥ ५७ ॥ काश्मिरमिंति वरि जाङ्ग ॥ असोनि
 मुठान दिसे प्राग् ॥ मार्ग मुणो निचालता झांग ॥ अिति ज्ञागी ज्ञादके ॥ ५८ ॥
 सांकिलिदीस तीभुक कवाटे ॥ लोहि दां पउति पुठीला त्रोडे ॥ मुकुणो
 निचाल कां चुटे ॥ सैंघक घोके जाइव ती ॥ ५९ ॥ सुर्य कांत कासारडी
 वनी ॥ प्रदृक छाच्यात वर्ष ॥ चक्र एके हुं सहुं सिनी ॥ क्रिजाकरि
 ति विजोदे ॥ ६० ॥ माणि कांची मु ॥ लीके ॥ नीकं पाचुचि सुनीकद
 के ॥ जहुखपत्रे कमल करे ॥ लीलाजिरिगद ॥ तेथेउँ द्वृव
 होतां परिमका ॥ हेझे द्वृत दानलि कका ॥ द्वारा द्वारी मुकुमाका ॥ हेम
 पत्रीतोरण ॥ ६१ ॥ इन स्तंभावरि के तुकी ॥ वेशन केले कनकति
 की ॥ मुकुकाफ की माणिकी ॥ घोघके के फकान्वा ॥ ६२ ॥ तेथेगरुड पाचुचे
 किर ॥ मुखेचुंबिति सकुमार ॥ मुवर्ष पुष्पिं पत्रीम्बपर ॥ नीकरला
 चोसधक ती ॥ ६३ ॥ कोंवति हेव द्वारी दारी ॥ पुष्पीफ की करित

वृद्धि॥ द्विपद च तू पदा चिया कोठी॥ लादा नो दावे घले॥ ६५॥ जा
 क्षिफ़ छाचे भउ पदा ठ॥ तकी बाहुति र सोचे पाठ॥ आवनि चोडने
 स्थादिश्व॥ हेम जं बुदा छिबी॥ दध्या गबीरणी बोरी आमृत फ़ की॥ ६६॥
 म झुरी नारिय की॥ वित्त उसमज्जी खोफ की॥ मारुलिं जी सुफ कित
 ६७॥ न बंगल तिका नाग बानि का॥ बकु बशत पत्र मळ्ही का॥ जाति
 कं कोक बाल्हि का पारि ज्ञाता छित॥ ६८॥ ओ सर्व सुर बोउ करि
 ता॥ सज्जा निमि किं जल्म दूत॥ उपरे तुछि वाँग गनां ता॥ स्वर्ग पाल
 उवरैतें॥ ६९॥ विच्चक मै नोर सुखी॥ पासं गाधात नेते तिस
 कोठी॥ तहिन बै सेत कब ई॥ ठुल बहु पषा आ आपी॥ ७०॥ तो सज्जा
 आ बलो कि तां दूखी॥ देखि नीहो यज्ञ जश्वरी॥ नहि दे रिवली देसे
 पाटी॥ असोसि का हिउरेना॥ ७१॥ ब्रह्म सभा इंद्र सभा॥ सुधर्म जेकं
 याह विसमा॥ व्याहु निधर्म शया चीसभा॥ मयनि मिति ज्ञाग की॥ ७२
 तु दुर्दश मासां निरोपना॥ पूर्ण आके सज्जे चेकाम॥ घमासी सागे दान

The Bhagavata Sanedhan Manuscript and the Yashoda
 Parva
 "Journal of Indian Studies"

वो वप्र॥ समाइ किपा हि जे॥ ७३॥ मित्र वं पुत्र धान कुमर॥ सवेष वि
 च रुषे श्वर॥ सुभुदुर्देश मेश्वर॥ समापाठो कातका॥ ७४॥ मंगक घोष
 वा जनिवा ये॥ मागध वर्णिति ब्रिदे॥ मार्ग सिं पोनि सु गं ये॥ पुष्य
 ज्ञारनि चुरले॥ ७५॥ समाहार प्रवेश काळी॥ द्विजा वौषिल्लाद्रवं
 जुकी॥ कहृष्य प्रोउनानाम् दी बनी सुतीजामार॥ ७६॥ समाव
 लै किंतो द्रवीगाल ज्ञास सु उरुला वे सूर्यी॥ चक्षु पोहनार उयातु
 टी॥ ऐजकाटि चुबक के॥ ७७॥ मात्र वया लोल आसी॥ उडेन जा
 ति आपुल शकी॥ मजो विहुं ज. मरु ती॥ जामारीच पडियले॥ ७८॥
 स जो खण्डी या हुतांन यने॥ अलै चासति मिल्ले॥ वे स का धातला
 जन भनेा त्याच्या कंतां ज चल ती॥ ७९॥ लुण विस्वर्ग मृस पाताकी॥ हे प्र
 ति मात्रागिके सुख की॥ घन्य गुणीया चाकर तव की॥ इघर कक्का व स
 त से॥ ८०॥ ज्ञापार बोसु निसंपत्ती॥ सुरुदसाव घरनि निती॥ ब
 हुत माने स्वस्त्र काप्रती॥ मयदुन व बोछ विका॥ ८१॥ संकोशोनि

Joint Project of
 Sahayodhara Mandal, Dhule and
 Nashwadrao Vaidya
 Mandal, Mumbai

(१)

राजेश्वर॥ उनेकदे शिवेनृपवर॥ सोये पाचारोनि घोर॥
 महेस्त्राह मातिला॥ ८॥ दाहा स्त्र रथ ब्राह्मणोत्प्र॥ औजनी
 दृष्टकेने परम॥ हेमपात्रिं अस्तोपम॥ अस्य ज्ञो उभोपिली॥ ९॥
 दृष्टपाय सप्तधुश्चकरा॥ दृष्टीन वनीत दुग्ध सारा॥ कर्की मु
 की रुचे श्वरा॥ दृष्टकेने ज्ञात नी॥ १०॥ येक ये काते सह रथ देनु॥
 सब ससाकं कार सगुणु॥ ११॥ कुरु नंदनु॥ रत्न माकाप
 ठ कुके॥ १२॥ ये काते सह रथ देनु॥ सब ससाकं कार सगुणु॥
 देता जाला कुरु नंदनु॥ रत्न माकाप ठ कुके॥ १३॥ इदृष्टो उ
 न आकियाते॥ इदृष्टीने दानदाय कातो॥ दृष्टिरुदुःख जगपते॥
 अर्पये दृष्टिले॥ १४॥ संसाराच्चाय अधीनी॥ श्वेत लीना हिं अ
 नुदिनी॥ उत्साह दे खोनि अमर गणी॥ दिव्य सुभनि वर्षले॥ १५॥
 माग घसूत वेता किका॥ न रवे नाच तिपरि हास का॥ गाय कवा
 द कफात कथा का॥ इ उजाका दिव्य दुर्लपी॥ १६॥ वैदिक वैद्य

पुराणीक शास्त्रज्ञ पंडित द्योति शिगणिक ॥ सिद्धांतवेक्षतत्वबो
 धक ॥ ज्ञाहोरा त्रिजवकीके ॥ ५८ ॥ सापुनि ज्ञमराव तीसदन ॥
 शक्रवसवीनं दनवन ॥ तैसारा ज्ञाकुरुनं दन ॥ सप्तासदनी
 विश्वामी ॥ ५९ ॥ मित्रमिभस्त्राजग्रीष्मावर्तमान झामाकुमरी ॥
 सुहृदवंधु सुखनिभीरी ॥ न सत हाल भ्रम किके ॥ ६० ॥ सप्तासदनी
 ची सुखव स्ती ॥ वरीप्प्य तैसारा तीसंगती ॥ लुणोनिरुषिग्रामा
 अपंकी ॥ सुखाउलनानृप ॥ ६१ ॥ मृकज्ञातीक बीचाना
 थ ॥ रघीराजे ज्ञासंख्याता ॥ तैसारा तैकान तांयेथ ॥ ज्ञातीविस्तार
 लोपाहे ॥ ६२ ॥ लुडसरिता प्राकृतमती ॥ सविस्तरनिरोपणाचा
 जिमुती ॥ वाकुटिकागलियानिक्षिती ॥ समुडप्रायमाजेन्न ॥ ६३ ॥
 नीरोपणालुपेषी उत्ताका ॥ पावगोनाकाटे सक्काका ॥ याकानि
 न पतेनिपान्नहाजाग्रस्त्वलक्षाहि जनुवादे ॥ ६४ ॥ ज्ञासीतदेवक स
 र्वैज्ञमार्की ॥ सुमित्रमेत्रेयशौककववकी ॥ महाराशिरासविमेत

Joint Project of the State Election Commission, Maharashtra, Mumbai,
 State Archaeological Department, Nashik, Maharashtra, Mumbai,
 State Library and Archives, Nashik, Maharashtra, Mumbai

की॥ जर्थवसुप्रसिद्धा॥ ४८॥ तैतरीय यज्ञवल्लि घे म्या॥ जागि मांडु
म कोशिक परम॥ क्लो प्रहर्षण रुषि सज्ज॥ जपसूहो ब्रह्म टैर्ह
४७॥ वगदालस्य स्वूक शिरान् वी॥ परावार ग्रीं जायन उपाणसी॥
दासोदर दमरु धीर पोराशी॥ मांकेते यो प्रसिद्धा॥ कृष्ण द्वै पाय
न अमुका॥ सुभंत उद्यमि नाम न स्ति देवव्यास शि छां माडी इंक॥
मीहि मेकते ठाई॥ ४९॥ काल की गाल वको पनवे गु॥ हरिबन्धु को
ठप्पस्तु गु॥ पर्वत द्वां तिल्ला गु॥ पवित्राणी मावरी॥ ५०॥
हे मुखक रुनि जासं रम्या त॥ रुपिध पोषन समर्थ॥ दिव्यक धापर
मापृता॥ यज्ञाणी वर्ती॥ ५१॥ न लद शीचेरा जे म्यर॥ कृष्णाम्
वकुकि चेरा जलकु प्रमर॥ ग्रीतिल्लि डो पुनि कर॥ घर्मीरा यावोक
गती॥ ५२॥ दुङ्ग केतु उ यसेन॥ संग्राम जित तक्ष कसेन॥ धेस
क दुर्मुख जयसेन॥ कमला पन भूपती॥ ५३॥ क्लो जकां जो उप्री
मरचा॥ चाषु सून देव वरात॥ पां ज्ञापै द्विक किसात॥ मागथ राजे

Digitized by srujanika@gmail.com

ते गर्इ॥५७॥ कुंभ कुलिंद अंगवंग॥ माझ कङ्गासुर कली
 ग॥ अंधक मुमुक्षा कादि सोंग॥ दास्य करिति व्यप्रच्छे॥५८॥ आके
 जसु याचियापंक्ती॥ वज्र अदर तेहु पालिती॥ तेसि याना नाघो बन
 जाती॥ वो कर गवी अमरते॥५९॥ मुरामी मुरथ चेकि तान॥ किविदी
 व सुदान के तु मान॥ अनिरुद्ध अनु पढ़त वृण॥ शोभ जीत न रेड
 ५३॥ सुहृद हृषि चेन्द्र च॥ उसमें हृषु कर गद दृशारण॥ शांबनि
 शाट प्रयुम्भा॥ अर्भ संजीति वृती॥५५॥ जाहू कर रहत व नीसा विकी॥
 कै कर या ज्ञ सेन सोम की॥ अकर तमी मक सीम की॥ अवर्म शाया
 ज्ञ बकिकै॥५६॥ समस्त याहू वा न्यु च॥ रुक्मिणी संसामेचे कु
 मर॥ अर्जुना पालिनि रंत रा॥ शश्वा ख विष्या साविती॥५७॥ अनु वै
 द विष्याध्ययन॥ साधा वया नृप नंदन॥ पार्थ की गुरु ने न्यरण॥
 अहो शत्रुघ्ने विती॥५८॥ अनु विहिद्येन्द्री व उपो ऊ॥ शश्वा साधना
 करु विकरी॥ रा ज पुत्र जाती आवरी॥ अक्षा सिति संतो दो॥५९॥

© 2023, Government Sanskrit Mandal, Dhule and its
 Professors and Students, Maharashtra, India



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com